मृच्छकटिकम्

Name: - Soni Kumari
Class - B.A II year
Deptt: - Sanskrit

- चतुर्थ अङ्क -

चतुर्थ अङ्क का नामक 'मदनिका शर्विलक' है। सर्वप्रथम शर्विलक अपनी प्रेयसी मदनिका के पास चुराए हुए आभूषणों सहित आता है, ये आभूषण वसन्तसेना के हैं यथार्थ को जानकर मदनिका अत्यन्त दुखित होती है और उन आभूषणों को निपुणतापूर्वक वसन्तसेना को दिला देती है। शर्विलक मदनिका को मुक्त कराता है तथा अपनी वधू बना लेता है। उधर चारुदत्त को मुक्त विदूषक के माध्यम से आभूषणों के बदले में रत्नमाला पहुँचाता है। वसन्तसेना रात्रि में चारुदत्त से मिलने के लिए आने का सन्देश भेजती है।

चतुर्थ अंक के प्रथम दृश्य में में वसन्तसेना मदनिका के साथ चारुदत्त का चित्र देखती मंचपर उपस्थित होती है। इसी बीच एक चेटी ने वसन्तसेना को आकर बतलाया कि शकार की गाड़ी तुम्हें लेने को आई है। माँ की आज्ञा है तुम जाओ। यह सुनकर वसन्तसेना क्रुद्ध हो जाती है और वहाँ जाने से इन्कार कर देती है। द्वितीय दृश्य में वसन्तसेना मदनिका को चारुदत्त का चित्र पलंग पर रखकर उसे पंखा लाने को भेजती है। इसी बीच शर्विलक चोरी के गहने लेकर वसन्तसेना के घर पहुँचता है। वसन्तसेना मदनिका और शर्विलक की बातों को छिपकर सुन लेती है। फलतः वसन्तसेना मदनिका को शर्विलक के हाथों में सौंप देती है।
तृतीय दृश्य में शर्विलक राजा पालक के द्वारा आर्यक को कैद किये जाने की घोषणा सुनता है। वह चेट के साथ मदनिका को सार्थवाह रेभिल के घर भेजकर स्वयं अपने मित्र को कारामुक्त कराने के लिए प्रस्थान करता है।

चतुर्थ दृश्य में एक चेटी ने वसन्तसेना को यह सूचना दी है कि आर्य चारुदत्त के घर से एक ब्राह्मण आया है, जो तुमसे मिलना चाहता है। वसन्तसेना प्रसन्न होकर उसे शीघ्र भीतर बुलवा लेती है।

मैत्रेय ने बतलाया कि चारुदत्त उसके गहनों को जुए में हार गया है इसलिए बदले में यह रत्नावली भेजी है। वसन्तसेना को इन बातों पर विश्वास नहीं होता परन्तु फिर भी वह रत्नमाला लेकर मैत्रेय को यह कहकर विदा कर देती है कि वह स्वयं सायंकाल उससे अर्थात चारुदत्त से मिलने आ रही है। ||

चतुर्थ अंक समाप्त

Class- B.A II year
Deptt - Sanskrit

श्लोक सं. -3 द्विरदेन्द्रगतिश्चकोरनेत्रः परिपूर्णेन्दुमुखः सुविग्रहश्च
द्विजमुख्यतमः कविर्बभूव प्रथितः शूद्रक इत्यगाधसत्वः ॥

प्रस्तुत श्लोक महाकवि शूद्रक जी का दिव्य व्यक्तित्व एवं उनके अति सुन्दर शरीर एवं बल का वर्णन किया गया है —

गजराज हाथी की तरह मदमस्त गतिवाले, चकोर की तरह आकर्षक आँखों वाले, पूर्ण चन्द्रमा के समान मनोहर मुखवाले, सुगठित शरीर वाले, क्षत्रियों में श्रेष्ठतम्, अगाध बलयुक्त शूद्रक नामक विख्यात कवि हुए।

महाकवि शूद्रक क्षत्रियों में अत्यन्त शक्तिशाली एवं सर्वश्रेष्ठ थे। वे सुन्दर आकर्षक व्यक्तित्व के धनि थे। वह जब चलते थे तो मानो अपने ही धुमगन और मदमस्त होकर चलते थे जैसे कोई हाथी चलता हो। उनकी आँखें ~~अंखी~~ इतनी सुन्दर एवं आकर्षक था जैसे चकोर पक्षी की आँखें होती है। और आकृति वर्ण पूर्ण चन्द्रमा के समान प्रतीत होता था। शरीर बड़ा ही सुन्दर एवं सुगठित था जो देखने ही अत्यन्त शक्तिशाली क्षत्रिय प्रतीत होते थे।

प्रस्तुत श्लोक में मालभारिणी छन्द एवं संसृष्टि अलंकार है।